الْمَنْصُوْرُوْنَ ﴿۱۷۲﴾ وَ اِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿۱۷۳﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى

की मदद होगी और बेशक हमारा ही लश्कर[154] ग़ालिब आएगा तो एक वक़्त तक तुम उन से

حِيْنٍ ﴿۱۷۴﴾ وَّ اَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿۱۷۵﴾ اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿۱۷۶﴾

मुंह फेर लो[155] और उन्हें देखते रहो कि अ़न्क़रीब वोह देखेंगे[156] तो क्या हमारे अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं

فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَآءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿۱۷۷﴾ وَ تَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى

फिर जब उतरेगा उन के आंगन में तो डराए गयों की क्या ही बुरी सुब्ह़ होगी और एक वक़्त तक उन से

حِيْنٍ ﴿۱۷۸﴾ وَّ اَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿۱۷۹﴾ سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا

मुंह फेर लो और इन्तिज़ार करो कि वोह अ़न्क़रीब देखेंगे पाकी है तुम्हारे रब को इ़ज़्ज़त वाले रब को

يَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَ سَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۸۱﴾ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۸۲﴾

उन की बातों से[157] और सलाम है पैग़म्बरों पर[158] और सब ख़ूबियां अल्लाह को जो सारे जहां का रब है

اٰيَاتُهَا ۸۸ (۳۸) سُوْرَةُ صٓ مَكِّيَّةٌ (۳۸) رُكُوْعَاتُهَا ۵

सूरए صٓ मक्किय्या है, इस में अठासी आयतें और पांच रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़्म वाला[1]

صٓ وَ الْقُرْاٰنِ ذِى الذِّكْرِ ﴿۱﴾ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ عِزَّةٍ وَّ شِقَاقٍ ﴿۲﴾

इस नामवर कुरआन की क़सम[2] बल्कि काफ़िर तकब्बुर और ख़िलाफ़ में हैं[3]

كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّ لَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ ﴿۳﴾ وَ

हम ने उन से पहले कितनी संगतें खपाईं[4] तो अब वोह पुकारें[5] और छूटने का वक़्त न था[6] और

154 : या'नी अहले ईमान । **155 :** जब तक कि तुम्हें उन के साथ क़िताल करने का हुक्म दिया जाए । **156 :** त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाब दुन्या व आख़िरत में, जब येह आयत नाज़िल हुई तो कुफ़्फ़ार ने बराहे तमस्ख़ुर व इस्तिह्ज़ा कहा कि येह अ़ज़ाब कब नाज़िल होगा ? इस के जवाब में अगली आयत नाज़िल हुई । **157 :** जो काफ़िर उस की शान में कहते हैं और उस के लिये शरीक और औलाद ठहराते हैं । **158 :** जिन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से तौह़ीद और एह़कामे शर्अ़ पहुंचाए । इन्सानी मरातिब में सब से आ'ला मर्तबा येह है कि ख़ुद कामिल हो और दूसरों की तक्मील करे । येह शान अम्बिया की है عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तो हर एक पर उन ह़ज़रात की इत्तिबाअ़ और उन की इक़्तिदा लाज़िम है ।
1 : "सूरए صٓ" इस का नाम "सूरए दावूद" भी है, येह सूरत मक्की है, इस में पांच रुकूअ़, अठासी आयतें और सात सो बत्तीस कलिमे और तीन हज़ार सड़सठ ह़र्फ़ हैं । **2 :** जो शरफ़ वाला है कि येह कलामे मो'जिज़ है । **3 :** और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़दावत रखते हैं इस लिये ह़क़ का ए'तिराफ़ नहीं करते । **4 :** या'नी आप की क़ौम से पहले कितनी उम्मतें हलाक कर दीं इसी इस्तिक्बार और अम्बिया की मुख़ालफ़त के बाइ़स **5 :** या'नी नुज़ूले अ़ज़ाब के वक़्त उन्हों ने फ़रियाद की । **6 :** कि ख़लास पा सकते, उस वक़्त की फ़रियाद बेकार थी,

www.dawateislami.net

عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ ؗ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ

उन्हें इस का अचम्बा (तअ़ज्जुब) हुवा कि इन के पास उन्हीं में का एक डर सुनाने वाला तशरीफ़ लाया[7] और काफ़िर बोले येह जादूगर है

كَذَّابٌ ۚۖ ۝٤ اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚۖ اِنَّ هٰذَا لَشَیْءٌ عُجَابٌ ۝٥

बड़ा झूटा क्या इस ने बहुत ख़ुदाओं का एक ख़ुदा कर दिया[8] बेशक येह अ़जीब बात है

وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَاصْبِرُوْا عَلٰۤى اٰلِهَتِكُمْ ۚۖ اِنَّ هٰذَا

और उन में के सरदार चले[9] कि इस के पास से चल दो और अपने ख़ुदाओं पर साबिर रहो बेशक उस में

لَشَیْءٌ یُّرَادُ ۚ ۝٦ مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِی الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ ۚۖ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا

इस का कोई मत़लब है येह तो हम ने सब से पिछले दीन नसरानियत में भी न सुनी[10] येह तो निरी नई

اخْتِلَاقٌ ۚۖ ۝٧ ءَاُنْزِلَ عَلَیْهِ الذِّكْرُ مِنْۢ بَیْنِنَا ؕ بَلْ هُمْ فِیْ شَكٍّ مِّنْ

गढ़त है क्या इन पर क़ुरआन उतारा गया हम सब में से[11] बल्कि वोह शक में हैं मेरी

ذِكْرِیْ ۚ بَلْ لَّمَّا یَذُوْقُوْا عَذَابِ ؕ ۝٨ اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآىِٕنُ رَحْمَةِ

किताब से[12] बल्कि अभी मेरी मार नहीं चखी है[13] क्या वोह तुम्हारे रब की रह़मत के ख़ज़ान्ची

رَبِّكَ الْعَزِیْزِ الْوَهَّابِ ۚ ۝٩ اَمْ لَهُمْ مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا

हैं[14] वोह इ़ज़्ज़त वाला बहुत अ़ता फ़रमाने वाला[15] क्या इन के लिये है सल्त़नत आस्मानों और ज़मीन की और जो

कुफ़्फ़ारे मक्का ने उन के ह़ाल से इ़ब्रत ह़ासिल न की। **7 :** या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم **8 शाने नुज़ूल :** जब ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लाम लाए तो मुसल्मानों को ख़ुशी हुई और काफ़िरों को निहायत रन्ज हुवा, वलीद बिन मुग़ीरा ने क़ुरैश के अ़माइद और सरबर आवरदा (बड़े बड़े असरो रुसूख़ वाले) पच्चीस आदमियों को जम्अ़ किया और उन्हें अबू त़ालिब के पास लाया और उन से कहा कि तुम हमारे सरदार हो और बुज़ुर्ग हो, हम तुम्हारे पास इस लिये आए हैं कि तुम हमारे और अपने भतीजे के दरमियान फ़ैसला कर दो, उन की जमाअ़त के छोटे दरजे के लोगों ने जो शोरिश बरपा कर रखी है वोह तुम जानते हो। अबू त़ालिब ने ह़ज़रत सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को बुला कर अ़र्ज़ किया कि येह आप की क़ौम के लोग हैं और आप से सुल्ह़ चाहते हैं, आप इन की त़रफ़ से यक लख़्त इन्ह़िराफ़ न कीजिये। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह मुझ से क्या चाहते हैं? उन्हों ने कहा कि हम इतना चाहते हैं कि आप हमें और हमारे मा'बूदों के ज़िक्र को छोड़ दीजिये, हम आप के और आप के मा'बूद की बदगोई के दरपै न होंगे। ह़ुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ने फ़रमाया : क्या तुम एक कलिमा क़ुबूल कर सकते हो? जिस से अ़रबो अ़जम के मालिक व फ़रमां रवा हो जाओ। अबू जह्ल ने कहा कि एक क्या हम दस कलिमे क़ुबूल कर सकते हैं। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : कहो ''لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہُ'' इस पर वोह लोग उठ गए और कहने लगे कि क्या इन्हों ने बहुत से ख़ुदाओं का एक ख़ुदा कर दिया, इतनी बहुत सी मख़्लूक़ के लिये एक ख़ुदा कैसे काफ़ी हो सकता है। **9 :** अबू त़ालिब की मजलिस से आपस में येह कहते : **10 :** नसरानी भी तीन ख़ुदाओं के क़ाइल थे, येह तो एक ही ख़ुदा बताते हैं। **11 :** अहले मक्का को सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के मन्सबे नुबुव्वत पर ह़सद आया और उन्हों ने येह कहा कि हम में साहिबे शरफ़ो इ़ज़्ज़त आदमी मौजूद थे उन में से किसी पर क़ुरआन न उतरा ख़ास ह़ज़रत सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) पर उतरा। **12 :** कि इस के लाने वाले ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब करते हैं। **13 :** अगर मेरा अ़ज़ाब चख लेते तो येह शक व तक्ज़ीब व ह़सद कुछ भी बाक़ी न रहता और नबी عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام की तस्दीक़ करते लेकिन उस वक़्त की तस्दीक़ मुफ़ीद न होती। **14 :** और क्या नुबुव्वत की कुन्जियां उन के हाथ में हैं जिसे चाहें दें अपने आप को क्या समझते हैं, **अल्लाह** तआ़ला और उस की मालिकिय्यत को नहीं जानते। **15 :** ह़स्बे

بَيۡنَهُمَا ۟ فَلۡيَرۡتَقُوۡا فِي الۡاَسۡبَابِ ﴿۱۰﴾ جُنۡدٌ مَّا هُنَالِكَ مَهۡزُوۡمٌ مِّنَ

कुछ इन के दरमियान है तो रस्सियां लटका कर चढ़ न जाएं[16] येह एक ज़लील लश्कर है उन्हीं लश्करों में से जो

الۡاَحۡزَابِ ﴿۱۱﴾ كَذَّبَتۡ قَبۡلَهُمۡ قَوۡمُ نُوۡحٍ وَّعَادٌ وَّفِرۡعَوۡنُ ذُو الۡاَوۡتَادِ ﴿۱۲﴾

वहीं भगा दिया जाएगा[17] इन से पहले झुटला चुके हैं नूह की क़ौम और आद और चौमेख़ा करने वाला फ़िरऔन[18]

وَثَمُوۡدُ وَقَوۡمُ لُوۡطٍ وَّاَصۡحٰبُ لۡــَٔيۡكَةِ ؕ اُولٰٓئِكَ الۡاَحۡزَابُ ﴿۱۳﴾ اِنۡ كُلٌّ اِلَّا

और समूद और लूत की क़ौम और बन वाले[19] येह हैं वोह गुरौह[20] इन में कोई ऐसा नहीं

كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ﴿۱۴﴾ وَمَا يَنۡظُرُ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا صَيۡحَةً وَّاحِدَةً

जिस ने रसूलों को न झुटलाया हो तो मेरा अ़ज़ाब लाज़िम हुवा[21] और येह राह नहीं देखते मगर एक चीख़ की[22]

مَّا لَهَا مِنۡ فَوَاقٍ ﴿۱۵﴾ وَقَالُوۡا رَبَّنَا عَجِّلۡ لَّنَا قِطَّنَا قَبۡلَ يَوۡمِ

जिसे कोई फेर नहीं सकता और बोले ऐ हमारे रब हमारा हिस्सा हमें जल्द दे दे हिसाब के दिन

الۡحِسَابِ ﴿۱۶﴾ اِصۡبِرۡ عَلٰى مَا يَقُوۡلُوۡنَ وَاذۡكُرۡ عَبۡدَنَا دَاوٗدَ ذَا الۡاَيۡدِ ۚ اِنَّهٗۤ

से पहले[23] तुम इन की बातों पर सब्र करो और हमारे बन्दे दावूद ने'मतों वाले को याद करो[24] बेशक वोह बड़ा रुजूअ़

اَوَّابٌ ﴿۱۷﴾ اِنَّا سَخَّرۡنَا الۡجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحۡنَ بِالۡعَشِيِّ وَالۡاِشۡرَاقِ ﴿۱۸﴾

करने वाला है[25] बेशक हम ने उस के साथ पहाड़ मुसख़्ख़र फ़रमा दिये कि तस्बीह़ करते[26] शाम को और सूरज चमकते[27]

इक़्तिज़ाए हिक्मत जिसे जो चाहे अ़ता फ़रमाए उस ने अपने ह़बीब मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को नुबुव्वत अ़ता फ़रमाई तो किसी को इस में दख़्ल देने और चूं व चरा की क्या मजाल। **16 :** और ऐसा इख़्तियार हो तो जिसे चाहें वह्य के साथ ख़ास करें और आ़लम की तदबीर अपने हाथ में लें और जब येह कुछ नहीं है तो उमूरे रब्बानिय्या व तदाबीरे इलाहिय्यह में दख़्ल क्यूं देते हैं, उन्हें इस का क्या ह़क़ है। कुफ़्फ़ार को येह जवाब देने के बा'द **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने अपने नबिय्ये करीम मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से नुसरत व मदद का वा'दा फ़रमाया है। **17 :** या'नी इन क़ुरैश की जमाअ़त उन्हीं लश्करों में से एक है जो आप से पहले अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के मुक़ाबिल गुरौह बांध बांध कर आया करते थे और ज़ियादतियां किया करते थे इस सबब से हलाक कर दिये गए, **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ख़बर दी कि येही ह़ाल इन का है इन्हें भी हज़ीमत होगी। चुनान्चे बद्र में ऐसा वाक़ेअ़ हुवा इस के बा'द **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ातिर के लिये पिछले अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام और उन की क़ौमों का ज़िक्र फ़रमाया। **18 :** जो किसी पर ग़ुस्सा करता था तो उसे लिटा कर उस के चारों हाथ पाउं खींच कर चारों त़रफ़ खूंटों में बंधवा देता था फिर उस को पिटवाता था और उस पर त़रह़ त़रह़ की सख़्तियां करता था। **19 :** जो शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम से थे। **20 :** जो अम्बिया के मुक़ाबिल जथ्थे बांध कर आए, मुश्रिकीने मक्का उन्हीं गुरौहों में से हैं। **21 :** या'नी उन गुज़री हुई उम्मतों ने जब अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की तक्ज़ीब की तो उन पर अ़ज़ाब लाज़िम हो गया तो इन जई़फ़ों का क्या ह़ाल होगा जब इन पर अ़ज़ाब उतरेगा। **22 :** या'नी क़ियामत के नफ़्ख़ए ऊला की जो इन के अ़ज़ाब की मीआद है **23 :** येह नज़्र बिन ह़ारिस ने बत़ौरे तमस्ख़ुर कहा था, इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से फ़रमाया कि **24 :** जिन को इबादत की बहुत कुव्वत दी गई थी। आप का त़रीक़ा था कि एक दिन रोज़ा रखते एक दिन इफ़्त़ार फ़रमाते और रात के पहले निस्फ़ हिस्से में इबादत करते इस के बा'द शब की एक तिहाई आराम फ़रमाते फिर बाक़ी छटा हिस्सा इबादत में गुज़ारते। **25 :** अपने रब की त़रफ़ **26 :** ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की तस्बीह़ के साथ। **27 :** इस आयत की तफ़्सीर में येह भी कहा गया है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के लिये पहाड़ों को ऐसा मुसख़्ख़र किया था कि

www.dawateislami.net

وَالطَّيْرَ مَحْشُوْرَةً ؕ كُلٌّ لَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿۱۹﴾ وَشَدَدْنَا مُلْكَهٗ وَاٰتَيْنٰهُ

और परिन्दे जम्अ़ किये हुए[28] सब उस के फ़रमां बरदार थे[29] और हम ने उस की सल्त़नत को मज़बूत़ किया[30] और उसे

الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ﴿۲۰﴾ وَهَلْ اَتٰىكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ ۘ اِذْ تَسَوَّرُوا

وقف لازم

हि़क्मत[31] और क़ौले फ़ैसल दिया[32] और क्या तुम्हें[33] उस दा'वे वालों की भी ख़बर आई जब वोह दीवार कूद कर

الْمِحْرَابَ ﴿۲۱﴾ اِذْ دَخَلُوْا عَلٰى دَاوٗدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوْا لَا تَخَفْ ۚ

दावूद की मस्जिद में आए[34] जब वोह दावूद पर दाख़िल हुए तो वोह उन से घबरा गया उन्हों ने अ़र्ज़ की डरिये नहीं

خَصْمٰنِ بَغٰى بَعْضُنَا عَلٰى بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَاۤ

हम दो फ़रीक़ हैं कि एक ने दूसरे पर ज़ियादती की है[35] तो हम में सच्चा फ़ैसला फ़रमा दीजिये और ख़िलाफ़े ह़क़ न कीजिये[36] और हमें

اِلٰى سَوَآءِ الصِّرَاطِ ﴿۲۲﴾ اِنَّ هٰذَاۤ اَخِیْ ۫ لَهٗ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ نَعْجَةً وَّلِیَ

सीधी राह बताइये बेशक येह मेरा भाई है[37] इस के पास निनानवे दुम्बियां हैं और मेरे

نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ ۫ فَقَالَ اَكْفِلْنِيْهَا وَعَزَّنِيْ فِي الْخِطَابِ ﴿۲۳﴾ قَالَ لَقَدْ

पास एक दुम्बी अब येह कहता है वोह भी मुझे ह़वाले कर दे और बात में मुझ पर ज़ोर डालता है दावूद ने फ़रमाया बेशक

जहां आप चाहते उन्हें अपने साथ ले जाते। (مدارک) **28 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि जब ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام तस्बीह़ करते तो पहाड़ भी आप के साथ तस्बीह़ करते और परिन्दे आप के पास जम्अ़ हो कर तस्बीह़ करते। **29 :** पहाड़ भी और परिन्द भी। **30 :** फ़ौज व लश्कर की कसरत अ़त़ा फ़रमा कर। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि रूए ज़मीन के बादशाहों में ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की सल्त़नत बड़ी मज़बूत़ और क़वी सल्त़नत थी, छत्तीस हज़ार मर्द आप के मेह़राब के पहरे पर मुक़र्रर थे। **31 :** या'नी नुबुव्वत। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने हि़क्मत की तफ़्सीर अ़द्ल की है, बा'ज़ ने किताबुल्लाह का इ़ल्म, बा'ज़ ने फ़िक़्ह, बा'ज़ ने सुन्नत। (جمل) **32 :** क़ौले फ़ैसल से इ़ल्मे क़ज़ा मुराद है जो ह़क़ व बात़िल में फ़र्क़ व तमीज़ कर दे। **33 :** ऐ सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم **34 :** येह आने वाले बक़ौले मश्हूर मलाएका थे जो ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की आज़्माइश के लिये आए थे। **35 :** उन का येह क़ौल एक मस्अले की फ़र्ज़ी शक्ल पेश कर के जवाब ह़ासिल करना था और किसी मस्अले के मुतअ़ल्लिक़ हुक्म मा'लूम करने के लिये फ़र्ज़ी सूरतें मुक़र्रर कर ली जाती हैं और मुअ़य्यन अश्ख़ास की त़रफ़ उन की निस्बत कर दी जाती है ताकि मस्अले का बयान बहुत वाज़ेह़ त़रीक़े पर हो और इब्हाम बाक़ी न रहे। यहां जो सूरते मस्अला उन फ़िरिश्तों ने पेश की इस से मक़्सूद ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام को तवज्जोह दिलाना थी उस अम्र की त़रफ़ जो उन्हें पेश आया था और वोह येह था कि आप की निनानवे बीबियां थीं इस के बा'द आप ने एक और औ़रत को पयाम दे दिया जिस को एक मुसल्मान पहले से पयाम दे चुका था लेकिन आप का पयाम पहुंचने के बा'द औ़रत के अइ़ज़्ज़ा व अक़ारिब दूसरे की त़रफ़ इल्तिफ़ात करने वाले कब थे ? आप के लिये राज़ी हो गए और आप से निकाह़ हो गया। एक क़ौल येह भी है कि उस मुसल्मान के साथ निकाह़ हो चुका था, आप ने उस मुसल्मान से अपनी रग़्बत का इज़्हार किया और चाहा कि वोह अपनी औ़रत को त़लाक़ दे दे, वोह आप के लिह़ाज़ से मन्अ़ न कर सका और उस ने त़लाक़ दे दी, आप का निकाह़ हो गया और उस ज़माने में ऐसा मा'मूल था कि अगर किसी शख़्स को किसी की औ़रत की त़रफ़ रग़्बत होती तो उस से इस्तिद्आ़ कर के त़लाक़ दिलवा लेता और बा'दे इ़द्दत निकाह़ कर लेता, येह बात न तो शरअ़न ना जाइज़ है न उस ज़माने के रस्म व आ़दत के ख़िलाफ़ लेकिन शाने अम्बिया बहुत अर्फ़ओ़ आ'ला होती है, इस लिये येह आप के मन्सबे आ़ली के लाइक़ न था तो मर्ज़िये इलाही येह हुई कि आप को इस पर आगाह किया जाए और इस का सबब येह पैदा किया कि मलाएका मुद्दई और मुद्दआ़ अ़लैह की शक्ल में आप के सामने पेश हुए। **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि अगर बुज़ुर्गों से कोई लग़्ज़िश सादिर हो और कोई अम्र ख़िलाफ़े शान वाक़ेअ़ हो जाए तो अदब येह है कि मो'तरिज़ाना ज़बान न खोली जाए बल्कि उस वाक़िए की मिस्ल एक वाक़िआ़ मुतसव्वर कर के उस की निस्बत साइलाना व मुस्तफ़्तियाना व मुस्तफ़ीदाना सुवाल किया जाए और उन की अ़ज़्मत व एह़तिराम का लिह़ाज़ रखा जाए और येह भी मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला عَزَّوَجَلَّ मालिको मौला अपने अम्बिया की ऐसी इ़ज़्ज़त फ़रमाता है कि उन को किसी बात पर आगाह करने के लिये मलाएका को इस त़रीक़े अदब के साथ ह़ाज़िर होने का हुक्म देता है। **36 :** जिस की ग़लत़ी हो बे रू रिआ़यत फ़रमा दीजिये। **37 :** या'नी दीनी भाई।

ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ اِلٰى نِعَاجِهٖ ؕ وَ اِنَّ كَثِیْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ لَیَبْغِیْ

येह तुझ पर ज़ियादती करता है कि तेरी दुम्बी अपनी दुम्बियों में मिलाने को मांगता है और बेशक अक्सर साझे वाले एक

بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ قَلِیْلٌ مَّا

दूसरे पर ज़ियादती करते हैं मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और वोह बहुत थोड़े

هُمْ ؕ وَ ظَنَّ دَاوٗدُ اَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَ خَرَّ رَاكِعًا وَّ اَنَابَ ۩ ﴿۲۴﴾ السجدة ١٠

हैं[38] अब दावूद समझा कि हम ने येह उस की जांच की थी[39] तो अपने रब से मुआफ़ी मांगी और सज्दे में गिर पड़ा[40] और रुजूअ़ लाया

فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ؕ وَ اِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَ حُسْنَ مَاٰبٍ ﴿۲۵﴾ یٰدَاوٗدُ اِنَّا

तो हम ने उसे येह मुआफ़ फ़रमा दिया और बेशक उस के लिये हमारी बारगाह में ज़रूर कुर्ब और अच्छा ठिकाना है ऐ दावूद बेशक हम ने

جَعَلْنٰكَ خَلِیْفَةً فِی الْاَرْضِ فَاحْكُمْ بَیْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَ لَا تَتَّبِعِ

तुझे ज़मीन में नाइब किया[41] तो लोगों में सच्चा हुक्म कर और ख़्वाहिश के

الْهَوٰى فَیُضِلَّكَ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ الَّذِیْنَ یَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ

पीछे न जाना कि तुझे अल्लाह की राह से बहका देगी बेशक वोह जो अल्लाह की राह से बहकते हैं

لَهُمْ عَذَابٌ شَدِیْدٌۢ بِمَا نَسُوْا یَوْمَ الْحِسَابِ ﴿۲۶﴾ ع وَ مَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ ع ٢ ١٢

उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब है इस पर कि वोह हिसाब के दिन को भूल बैठे[42] और हम ने आस्मान और

وَ الْاَرْضَ وَ مَا بَیْنَهُمَا بَاطِلًا ؕ ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا ۚ فَوَیْلٌ

ज़मीन और जो कुछ इन के दरमियान है बेकार न बनाए येह काफ़िरों का गुमान है[43] तो काफ़िरों

لِّلَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنَ النَّارِ ﴿۲۷﴾ اَمْ نَجْعَلُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا

की ख़राबी है आग से क्या हम उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे

38 : हज़रते दावूद عَلَیْهِ السَّلَام की येह गुफ़्तगू सुन कर फ़िरिश्तों में से एक ने दूसरे की तरफ़ देखा और तबस्सुम कर के वोह आस्मान की तरफ़ रवाना हो गए। **39 :** और दुम्बी एक किनाया था जिस से मुराद औ़रत थी, क्यूं कि निनानवे औ़रतें आप के पास होते हुए एक और औ़रत की आप ने ख़्वाहिश की थी, इस लिये दुम्बी के पैराए में येह सुवाल किया गया। जब आप ने येह समझा **40 मस्अला :** इस आयत से साबित होता है कि नमाज़ में रुकूअ़ करना सज्दए तिलावत के क़ाइम मक़ाम हो जाता है जब कि निय्यत की जाए **41 :** ख़ल्क़ की तदबीर पर आप को मामूर किया और आप का हुक्म उन में नाफ़िज़ फ़रमाया। **42 :** और इस वज्ह से ईमान से महरूम रहे अगर उन्हें रोज़े हिसाब का यक़ीन होता तो दुन्या ही में ईमान ले आते। **43 :** अगर्चे वोह सराहतन येह न कहें कि आस्मान व ज़मीन और तमाम दुन्या बेकार पैदा की गई लेकिन जब कि बअ़्स व जज़ा के मुन्किर हैं तो नतीजा येही है कि आ़लम की ईजाद को अ़बस और बे फ़ाएदा मानें।

www.dawateislami.net

الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۫ اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ ﴿۲۸﴾

काम किये उन जैसा कर दें जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं या हम परहेज़ गारों को शरीर बे हुक्मों के बराबर ठहरा दें[44]

كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْۤا اٰيٰتِهٖ وَ لِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۲۹﴾

येह एक किताब है कि हम ने तुम्हारी त़रफ़ उतारी[45] बरकत वाली ताकि इस की आयतों को सोचें और अ़क्ल मन्द नसीह़त मानें

وَ وَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿ؕ۳۰﴾ اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ

और हम ने दावूद को[46] सुलैमान अ़ता फ़रमाया क्या अच्छा बन्दा बेशक वोह बहुत रुजूअ़ लाने वाला[47] जब कि उस पर पेश किये गए

بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ ﴿ۙ۳۱﴾ فَقَالَ اِنِّيْۤ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ

तीसरे पहर को[48] कि रोकिये तो तीन पाउं पर खड़े हों चौथे सुम का कनारा ज़मीन पर लगाए हुए और चलाइये तो हवा हो जाएं[49] तो सुलैमान ने कहा मुझे इन

رَبِّيْ ۚ حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿ٙ۳۲﴾ رُدُّوْهَا عَلَيَّ ؕ فَطَفِقَ مَسْحًۢا بِالسُّوْقِ

घोड़ों की मह़ब्बत पसन्द आई है अपने रब की याद के लिये[50] फिर उन्हें चलाने का हुक्म दिया यहां तक कि निगाह से पर्दे में छुप गए[51] फिर हुक्म दिया कि उन्हें मेरे

وَ الْاَعْنَاقِ ﴿۳۳﴾ وَ لَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَ اَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ

पास वापस लाओ तो उन की पिंडलियों और गरदनों पर हाथ फेरने लगा[52] और बेशक हम ने सुलैमान को जांचा[53] और उस के तख़्त पर एक बेजान बदन डाल दिया[54] फिर

44 : येह बात बिल्कुल हिक्मत के ख़िलाफ़ है और जो शख़्स जज़ा का क़ाइल नहीं वोह ज़रूर मुफ़्सिद व मुस्लेह़ और फ़ाजिर व मुत्तक़ी को बराबर क़रार देगा और इन में फ़र्क़ न करेगा कुफ़्फ़ार इस जहल में गिरिफ़्तार हैं। **शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने मुसल्मानों से कहा था कि आख़िरत में जो ने'मतें तुम्हें मिलेंगी वोही हमें भी मिलेंगी इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इर्शाद फ़रमाया गया कि नेक व बद मोमिन व काफ़िर को बराबर कर देना मुक़्तज़ाए हिक्मत नहीं, कुफ़्फ़ार का ख़याल बात़िल है। **45 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ **46 :** फ़रज़न्दे अरजुमन्द **47 :** **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ और तमाम अवक़ात तस्बीह़ व ज़िक्र में मश्ग़ूल रहने वाला। **48 :** बा'दे ज़ोहर ऐसे घोड़े **49 :** येह हज़ार घोड़े थे जो जिहाद के लिये ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के मुलाह़ज़ा में बा'दे ज़ोहर पेश किये गए। **50 :** या'नी मैं इन से रिज़ाए इलाही और तक़्वियत व ताईदे दीन के लिये मह़ब्बत करता हूं, मेरी मह़ब्बत इन के साथ दुन्यवी ग़रज़ से नहीं है। (تفسیر کبیر) **51 :** या'नी नज़र से ग़ाइब हो गए **52 :** और इस हाथ फेरने के चन्द बाइस थे : **एक** तो घोड़ों की इ़ज़्ज़तो शरफ़ का इज़्हार कि वोह दुश्मन के मुक़ाबले में बेहतर मुईन हैं। **दूसरे** उमूरे सल्त़नत की ख़ुद निगरानी फ़रमाना कि तमाम उ़म्माल मुस्तइ़द रहें। **सिवुम** येह कि आप घोड़ों के अह़वाल और उन के अमराज़ व उ़यूब के आ'ला माहिर थे, उन पर हाथ फेर कर उन की ह़ालत का इम्तिह़ान फ़रमाते थे। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इन आयात की तफ़्सीर में बहुत से वाही (फ़ुज़ूल) अक़्वाल लिख दिये हैं जिन की सिह़ह़त पर कोई दलील नहीं और वोह मह़्ज़ ह़िकायात हैं जो दलाइले क़विय्या के सामने किसी त़रह़ क़ाबिले क़बूल नहीं और येह तफ़्सीर जो ज़िक्र की गई येह इ़बारत क़ुरआन से बिल्कुल मुत़ाबिक़ है। (تفسیر کبیر) وَلِلّٰهِ الْحَمْد

53 : बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़दीस है सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया था कि मैं आज रात में अपनी नव्वे बीबियों पर दौरा करूंगा, हर एक ह़ामिला होगी और हर एक से राहे ख़ुदा में जिहाद करने वाला सुवार पैदा होगा, मगर येह फ़रमाते वक़्त ज़बाने मुबारक से اِنْ شَآءَ اللّٰہ न फ़रमाया (ग़ालिबन ह़ज़रत किसी ऐसे शुग़्ल में थे कि इस का ख़याल न रहा) तो कोई भी औ़रत ह़ामिला न हुई सिवाए एक के और उस के भी नाक़िसुल ख़िल्क़त बच्चा पैदा हुवा। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام ने اِنْ شَآءَ اللّٰہ फ़रमाया होता तो उन सब औ़रतों के लड़के ही पैदा होते और वोह राहे ख़ुदा में जिहाद करते। (بخاری پارہ تیرہ کتاب الانبیاء) **54 :** या'नी ग़ैर ताम्मुल ख़िल्क़त बच्चा।

www.dawateislami.net

اَنَابَ ﴿٣٤﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِیْ وَهَبْ لِیْ مُلْكًا لَّا یَنْۢبَغِیْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ
रुजूअ़ लाया[55] अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दे और मुझे ऐसी सल्तनत अ़ता कर कि मेरे बा'द किसी को

بَعْدِیْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٣٥﴾ فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّیْحَ تَجْرِیْ بِاَمْرِهٖ
लाइक़ न हो[56] बेशक तू ही है बड़ी देन वाला तो हम ने हवा उस के बस में कर दी कि उस के हुक्म से नर्म नर्म

رُخَآءً حَیْثُ اَصَابَ ﴿٣٦﴾ وَ الشَّیٰطِیْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ وَّ غَوَّاصٍ ﴿٣٧﴾ وَّ اٰخَرِیْنَ
चलती[57] जहां वोह चाहता और देव बस में कर दिये हर मि'मार[58] और गोता ख़ोर[59] और दूसरे

مُقَرَّنِیْنَ فِی الْاَصْفَادِ ﴿٣٨﴾ هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَیْرِ
और बेड़ियों में जकड़े हुए[60] येह हमारी अ़ता है अब तू चाहे तो एहसान कर[61] या रोक रख[62] तुझ पर कुछ

حِسَابٍ ﴿٣٩﴾ وَ اِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰی وَ حُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٤٠﴾ ع وَ اذْكُرْ عَبْدَنَاۤ
हिसाब नहीं और बेशक उस के लिये हमारी बारगाह में ज़रूर कुर्ब और अच्छा ठिकाना है और याद करो हमारे बन्दे

اَیُّوْبَ ۘ اِذْ نَادٰی رَبَّهٗۤ اَنِّیْ مَسَّنِیَ الشَّیْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّ عَذَابٍ ﴿٤١﴾ ط
अय्यूब को जब उस ने अपने रब को पुकारा कि मुझे शैत़ान ने तक्लीफ़ और ईज़ा लगा दी[63]

اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّ شَرَابٌ ﴿٤٢﴾ وَ وَهَبْنَا لَهٗۤ اَهْلَهٗ
हम ने फ़रमाया ज़मीन पर अपना पाउं मार[64] येह है ठन्डा चश्मा नहाने और पीने को[65] और हम ने उसे उस के घर वाले

وَ مِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَ ذِكْرٰی لِاُولِی الْاَلْبَابِ ﴿٤٣﴾ وَ خُذْ بِیَدِكَ
और उन के बराबर और अ़ता फ़रमा दिये अपनी रहमत करने[66] और अ़क़्ल मन्दों की नसीहत को और फ़रमाया कि अपने हाथ में

ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَ لَا تَحْنَثْ ط اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ط نِعْمَ الْعَبْدُ ط اِنَّهٗۤ
एक झाड़ू ले कर उस से मार दे[67] और क़सम न तोड़ बेशक हम ने उसे साबिर पाया क्या अच्छा बन्दा[68] बेशक वोह बहुत

55 : अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ इस्तिग़फ़ार कर के اِنْ شَآءَ اللّٰه कहने की भूल पर और ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْهِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में 56 : इस से येह मक़्सूद था कि ऐसा मुल्क आप के लिये मो'जिज़ा हो। 57 : फ़रमां बरदाराना त़रीक़े पर 58 : जो आप के हुक्म से ह़स्बे मरज़ी अ़जीबो ग़रीब इमारतें ता'मीर करता 59 : जो आप के लिये समुन्दर से मोती निकालता। दुन्या में सब से पहले समुन्दर से मोती निकलवाने वाले आप ही हैं। 60 : सरकश शैत़ान भी आप के मुसख़्ख़र कर दिये गए जिन को आप तादीब और फ़साद से रोकने के लिये बेड़ियों और ज़न्जीरों में जकड़वा कर क़ैद करते थे। 61 : जिस पर चाहे 62 : जिस किसी से चाहे या'नी आप को देने और न देने का इख़्तियार दिया गया जैसी मरज़ी हो करें। 63 : जिस्म और माल में, इस से आप का मरज़ और उस के शदाइद मुराद हैं। (इस वाक़िए का मुफ़स्सल बयान सूरए अम्बियाअ के रुकूअ़ छ[6] में गुज़र चुका है) 64 : चुनान्चे आप ने ज़मीन में पाउं मारा और उस से आबे शीरीं का एक चश्मा ज़ाहिर हुवा और आप से कहा गया : 65 : चुनान्चे आप ने उस से पिया और गुस्ल किया और तमाम ज़ाहिरी व बात़िनी मरज़ और तक्लीफ़ें दफ़्अ़ हो गईं। 66 : चुनान्चे मरवी है कि जो औलाद आप की मर चुकी थी अल्लाह तआ़ला ने उस को ज़िन्दा किया और अपने फ़ज़्लो रहमत से इतने ही और अ़ता फ़रमाए। 67 : अपनी बीबी को जिस

www.dawateislami.net

اَوَّابٌ ﴿٤٤﴾ وَاذْكُرْ عِبٰدَنَآ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ اُولِي الْاَيْدِيْ
रुजूअ़ लाने वाला है और याद करो हमारे बन्दों इब्राहीम और इस्हाक़ और या'क़ूब क़ुदरत और

وَالْاَبْصَارِ ﴿٤٥﴾ اِنَّآ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ﴿٤٦﴾ ج وَاِنَّهُمْ عِنْدَنَا
इ़ल्म वालों को[69] बेशक हम ने उन्हें एक खरी बात से इम्तियाज़ बख़्शा कि वोह उस घर की याद है[70] और बेशक वोह हमारे नज़्दीक

لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ﴿٤٧﴾ ط وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ط
चुने हुए पसन्दीदा हैं और याद करो इस्माई़ल और यसअ़ और ज़ुल किफ़्ल को[71]

وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ﴿٤٨﴾ ط هٰذَا ذِكْرٌ ط وَاِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٤٩﴾ لا
और सब अच्छे हैं येह नसीहत है और बेशक[72] परहेज़ गारों का ठिकाना भला

جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ﴿٥٠﴾ ج مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ فِيْهَا
बसने के बाग़ उन के लिये सब दरवाज़े खुले हुए उन में तक्या लगाए[73] उन में बहुत से

بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ ﴿٥١﴾ وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ﴿٥٢﴾
मेवे और शराब मांगते हैं और उन के पास वोह बीबियां हैं कि अपने शोहर के सिवा और की त़रफ़ आंख नहीं उठातीं एक उ़म्र की[74]

هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٥٣﴾ الثلثة اِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ
येह है वोह जिस का तुम्हें वा'दा दिया जाता है ह़िसाब के दिन बेशक येह हमारा रिज़्क़ है कि कभी ख़त्म

نَّفَادٍ ﴿٥٤﴾ صلے هٰذَا ط وَاِنَّ لِلطّٰغِيْنَ لَشَرَّ مَاٰبٍ ﴿٥٥﴾ لا جَهَنَّمَ ج يَصْلَوْنَهَا ج فَبِئْسَ
न होगा[75] उन को तो येह है[76] और बेशक सरकशों का बुरा ठिकाना जहन्नम कि उस में जाएंगे तो क्या ही

الْمِهَادُ ﴿٥٦﴾ هٰذَا لا فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌ ﴿٥٧﴾ لا وَّاٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖٓ
बुरा बिछोना[77] उन को येह है तो इसे चखें खौलता पानी और पीप[78] और इसी शक्ल के

الثلثة

को सो ज़र्बें मारने की क़सम खाई थी देर से ह़ाज़िर होने के बाइ़स **68 :** या'नी अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام **69 :** जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने ह़िक्मते इ़ल्मिय्या व अ़मलिय्या अ़ता फ़रमाई और अपनी मा'रिफ़त और त़ाआ़त पर क़ुव्वत अ़ता फ़रमाई । **70 :** या'नी दारे आख़िरत की, कि वोह लोगों को उसी की याद दिलाते हैं और कसरत से उस का ज़िक्र करते हैं, मह़ब्बते दुन्या ने उन के क़ुलूब में जगह नहीं पाई । **71 :** या'नी उन के फ़ज़ाइल और उन के सब्र को ताकि उन की पाक ख़स्लतों से लोग नेकियों का ज़ौक़ो शौक़ ह़ासिल करें और ज़ुल किफ़्ल की नुबुव्वत में इख़्तिलाफ़ है । **72 :** आख़िरत में **73 :** मुरस्सअ़ तख़्तों पर **74 :** या'नी सब सिन में बराबर ऐसे ही हुस्न व जवानी में, आपस में मह़ब्बत रखने वाली, न एक को दूसरे से बुग़्ज़ न रश्क न ह़सद । **75 :** हमेशा बाक़ी रहेगा वहां जो चीज़ ली जाएगी और ख़र्च की जाएगी वोह अपनी जगह वैसी ही हो जाएगी, दुन्या की चीज़ों की त़रह़ फ़ना और नेस्तो नाबूद न होगी । **76 :** या'नी ईमान वालों को **77 :** भड़क्ने वाली आग, कि वोही फ़र्श होगी । **78 :** जो जहन्नमियों के जिस्मों और उन के सड़े हुए ज़ख़्मों और नजासत के मक़ामों से बहेगी जलती बदबूदार ।

اَزْوَاجٌ ﴿۵۸﴾ هٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ ؕ اِنَّهُمْ صَالُوا

और जोड़े[79] उन से कहा जाएगा येह एक और फ़ौज तुम्हारे साथ धंसी पड़ती है जो तुम्हारी थी[80] वोह कहेंगे इन को खुली जगह न मिलो आग में तो इन को

النَّارِ ﴿۵۹﴾ قَالُوْا بَلْ اَنْتُمْ ۫ لَا مَرْحَبًا بِكُمْ ؕ اَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوْهُ لَنَا ۚ

जाना ही है वहां भी तंग जगह में रहें ताबेअ़ बोले बल्कि तुम्हीं खुली जगह न मिलो येह मुसीबत तुम हमारे आगे लाए[81]

فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿۶۰﴾ قَالُوْا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا

तो क्या ही बुरा ठिकाना[82] वोह बोले ऐ हमारे रब जो येह मुसीबत हमारे आगे लाया उसे आग में दूना

فِي النَّارِ ﴿۶۱﴾ وَقَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرٰى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْاَشْرَارِ ﴿۶۲﴾ ؕ

अ़ज़ाब बढ़ा और[83] बोले हमें क्या हुवा हम उन मर्दों को नहीं देखते जिन्हें बुरा समझते थे[84]

اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ ﴿۶۳﴾ اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ

क्या हम ने उन्हें हंसी बना लिया[85] या आंखें उन की तरफ़ से फिर गईं[86] बेशक येह ज़रूर हक़ है

ع ۴ تَخَاصُمُ اَهْلِ النَّارِ ﴿۶۴﴾ ع قُلْ اِنَّمَآ اَنَا مُنْذِرٌ ۖ ۗ وَّمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ

दोज़ख़ियों का बाहम झगड़ा तुम फ़रमाओ[87] मैं डर सुनाने वाला ही हूं[88] और मा'बूद कोई नहीं मगर एक

الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿۶۵﴾ ج رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ

अल्लाह सब पर ग़ालिब मालिक आस्मानों और ज़मीन का और जो कुछ इन के दरमियान है साहिबे इ़ज़्ज़त

الْغَفَّارُ ﴿۶۶﴾ قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيْمٌ ﴿۶۷﴾ لا اَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُوْنَ ﴿۶۸﴾ مَا كَانَ لِيَ

बड़ा बख़्शने वाला तुम फ़रमाओ वोह[89] बड़ी ख़बर है तुम उस से ग़फ़्लत में हो[90] मुझे

مِنْ عِلْمٍۭ بِالْمَلَاِ الْاَعْلٰٓى اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿۶۹﴾ اِنْ يُّوْحٰٓى اِلَيَّ اِلَّآ اَنَّمَآ اَنَا

आ़लमे बाला की क्या ख़बर थी जब वोह झगड़ते थे[91] मुझे तो येही वह्य होती है कि मैं नहीं मगर

79 : क़िस्म क़िस्म के अ़ज़ाब **80 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि जब काफ़िरों के सरदार जहन्नम में दाख़िल होंगे और उन के पीछे पीछे उन की इत्तिबाअ़ करने वाले तो जहन्नम के ख़ाज़िन उन सरदारों से कहेंगे, येह तुम्हारे मुत्तबिईन की फ़ौज है जो तुम्हारी त़रह़ तुम्हारे साथ जहन्नम में धंसी पड़ती है। **81 :** कि तुम ने पहले कुफ़्र इख़्तियार किया और हमें इस राह पर चलाया। **82 :** या'नी जहन्नम निहायत ही बुरा ठिकाना है। **83 :** कुफ़्फ़ार के अ़माइद और सरदार (बड़े बड़े असरो रुसूख़ वाले) **84 :** या'नी ग़रीब मुसल्मानों को और उन्हें वोह अपने दीन का मुख़ालिफ़ होने के बाइ़स शरीर कहते थे और ग़रीब होने की वज्ह से ह़क़ीर समझते थे, जब कुफ़्फ़ार जहन्नम में उन्हें न देखेंगे तो कहेंगे वोह हमें क्यूं नज़र नहीं आते। **85 :** और दर ह़क़ीक़त वोह ऐसे न थे, दोज़ख़ में आए ही नहीं, हमारा उन के साथ इस्तिह्ज़ा करना और उन की हंसी बनाना बात़िल था। **86 :** इस लिये वोह हमें नज़र न आए या येह मा'ना हैं कि उन की त़रफ़ से आंखें फिर गईं और दुन्या में हम उन के मर्तबे और बुज़ुर्गी को न देख सके। **87 :** ऐ सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! मक्का के कुफ़्फ़ार से **88 :** तुम्हें अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ दिलाता हूं। **89 :** या'नी कुरआन या क़ियामत या मेरा रसूले मुन्ज़िर होना या अल्लाह तआ़ला का وَاحِدٌ لَا شَرِیْکَ لَہٗ होना **90 :** कि

www.dawateislami.net

نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿٧٠﴾ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّیْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ طِیْنٍ ﴿٧١﴾

रोशन डर सुनाने वाला[92] जब तुम्हारे रब ने फ़िरिश्तों से फ़रमाया कि मैं मिट्टी से इन्सान बनाऊंगा[93]

فَاِذَا سَوَّیْتُهٗ وَ نَفَخْتُ فِیْهِ مِنْ رُّوْحِیْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِیْنَ ﴿٧٢﴾

फिर जब मैं उसे ठीक बना लूं[94] और उस में अपनी त़रफ़ की रूह़ फूंकूं[95] तो तुम उस के लिये सज्दे में गिरना

فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿٧٣﴾ اِلَّاۤ اِبْلِیْسَ ؕ اِسْتَكْبَرَ وَ كَانَ

तो सब फ़िरिश्तों ने सज्दा किया एक एक ने कि कोई बाक़ी न रहा मगर इब्लीस ने[96] उस ने गुरूर किया और वोह था

مِنَ الْكٰفِرِیْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ یٰۤاِبْلِیْسُ مَا مَنَعَكَ اَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ

ही काफ़िरों में[97] फ़रमाया ऐ इब्लीस तुझे किस चीज़ ने रोका कि तू उस के लिये सज्दा करे जिसे मैं ने अपने

بِیَدَیَّ ؕ اَسْتَكْبَرْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِیْنَ ﴿٧٥﴾ قَالَ اَنَا خَیْرٌ مِّنْهُ ؕ

हाथों से बनाया क्या तुझे गुरूर आ गया या तू था ही मग़रूरों में[98] बोला मैं इस से बेहतर हूं[99]

मुझ पर ईमान नहीं लाते और कुरआने पाक और मेरे दीन को नहीं मानते। **91 :** या'नी फ़िरिश्ते ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ السَّلَام के बाब में। येह ह़ज़रते सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सिह़्ह़ते नुबुव्वत की एक दलील है। मुद्दआ़ येह है कि आ़लमे बाला में फ़िरिश्तों का ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बाब में सुवाल व जवाब करना मुझे क्या मा'लूम होता अगर मैं नबी न होता, इस की ख़बर देना मेरी नुबुव्वत और मेरे पास वह़्य आने की दलील है। **92 :** दारिमी और तिरमिज़ी की ह़दीसों में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं अपने बेहतरीन ह़ाल में अपने रब عَزَّوَجَلَّ के दीदार से मुशर्रफ़ हुवा (ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि मेरे ख़याल में येह वाक़िआ़ ख़्वाब का है) हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَعَلَا व तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया : ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) आ़लमे बाला के मलाएका किस बह़्स में हैं ? मैं ने अ़र्ज़ किया : या रब तू ही दाना है। हुज़ूर ने फ़रमाया : फिर रब्बुल इ़ज़्ज़त ने अपना दस्ते रह़मत व करम मेरे दोनों शानों के दरमियान रखा और मैं ने उस के फ़ैज़ का असर अपने क़ल्बे मुबारक में पाया तो आस्मान व ज़मीन की तमाम चीज़ें मेरे इ़ल्म में आ गईं, फिर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया : या मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) क्या तुम जानते हो कि आ़लमे बाला के मलाएका किस अम्र में बह़्स कर रहे हैं ? मैं ने अ़र्ज़ किया : हां ! ऐ रब मैं जानता हूं, वोह कफ़्फ़ारात में बह़्स कर रहे हैं और कफ़्फ़ारात येह हैं नमाज़ों के बा'द मस्जिद में ठहरना और पियादा पा जमाअ़तों के लिये जाना और जिस वक़्त सरदी वग़ैरा के बाइ़स पानी का इस्ति'माल ना गवार हो उस वक़्त अच्छी त़रह वुज़ू करना, जिस ने येह किया उस की ज़िन्दगी भी बेहतर और मौत भी बेहतर और गुनाहों से ऐसा पाक साफ़ निकलेगा जैसा अपनी विलादत के दिन था। और फ़रमाया : ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) नमाज़ के बा'द येह दुआ़ किया करो ''اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ فِعْلَ الْخَیْرَاتِ وَتَرْكَ الْمُنْكَرَاتِ وَحُبَّ الْمَسَاكِیْنِ وَاِذَا اَرَدْتَ بِعِبَادِكَ فِتْنَةً فَاقْبِضْنِیْ اِلَیْكَ غَیْرَ مَفْتُوْنٍ'' बा'ज़ रिवायतों में येह है कि ह़ज़रते सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुझ पर हर चीज़ रोशन हो गई और मैं ने पहचान ली और एक रिवायत में है कि जो कुछ मशरिक़ व मग़रिब में है सब मैं ने जान लिया। इमाम अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन अ़ली बिन मुह़म्मद इब्ने इब्राहीम बग़दादी मा'रूफ़ ब ख़ाज़िन अपनी तफ़्सीर में इस के मा'ना येह बयान फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का सीनए मुबारक खोल दिया और क़ल्बे शरीफ़ को मुनव्वर कर दिया और जो कोई न जाने उस सब की मा'रिफ़त आप को अ़त़ा कर दी ता आंकि आप ने ने'मत व मा'रिफ़त की सरदी अपने क़ल्बे मुबारक में पाई और जब क़ल्बे शरीफ़ मुनव्वर हो गया और सीनए पाक खुल गया तो जो कुछ आस्मानों और ज़मीनों में है ब ए'लामे इलाही जान लिया। **93 :** या'नी (ह़ज़रत) आदम को पैदा करूंगा। **94 :** या'नी उस की पैदाइश तमाम कर दूं **95 :** और उस को ज़िन्दगी अ़त़ा कर दूं **96 :** सज्दा न किया। **97 :** या'नी इ़ल्मे इलाही में **98 :** या'नी उस क़ौम में से जिन का शेवा ही तकब्बुर है। **99 :** इस से उस की मुराद येह थी कि अगर आदम आग से पैदा किये जाते और मेरे बराबर भी होते जब भी मैं इन्हें सज्दा न करता चे जाए कि इन से बेहतर हो कर इन्हें सज्दा करूं।

خَلَقْتَنِیْ مِنْ نَّارٍ وَّ خَلَقْتَهٗ مِنْ طِیْنٍ ۝٧٦ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ

तू ने मुझे आग से बनाया और इसे मिट्टी से पैदा किया फ़रमाया तू जन्नत से निकल जा कि तू रांधा

رَجِیْمٌ ۝٧٧ وَّ اِنَّ عَلَیْكَ لَعْنَتِیْۤ اِلٰی یَوْمِ الدِّیْنِ ۝٧٨ قَالَ رَبِّ

(ला'नत किया) गया[100] और बेशक तुझ पर मेरी ला'नत है क़ियामत तक[101] बोला ऐ मेरे रब

فَاَنْظِرْنِیْۤ اِلٰی یَوْمِ یُبْعَثُوْنَ ۝٧٩ قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِیْنَ ۝٨٠ اِلٰی

ऐसा है तो मुझे मोहलत दे उस दिन तक कि वोह उठाए जाएं[102] फ़रमाया तो तू मोहलत वालों में है उस

یَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ۝٨١ قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِیَنَّهُمْ اَجْمَعِیْنَ ۝٨٢ اِلَّا

जाने हुए वक़्त के दिन तक[103] बोला तो तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ज़रूर मैं उन सब को गुमराह कर दूंगा मगर

عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِیْنَ ۝٨٣ قَالَ فَالْحَقُّ ۫ وَ الْحَقَّ اَقُوْلُ ۝٨٤ لَاَمْلَـَٔنَّ

जो उन में तेरे चुने हुए बन्दे हैं फ़रमाया तो सच येह है और मैं सच ही फ़रमाता हूं बेशक मैं ज़रूर जहन्नम

جَهَنَّمَ مِنْكَ وَ مِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِیْنَ ۝٨٥ قُلْ مَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَیْهِ

भर दूंगा तुझ से[104] और उन में से[105] जितने तेरी पैरवी करेंगे सब से तुम फ़रमाओ मैं इस क़ुरआन पर तुम से कुछ

مِنْ اَجْرٍ وَّ مَاۤ اَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِیْنَ ۝٨٦ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِیْنَ ۝٨٧

अज्र नहीं मांगता और मैं बनावट वालों में नहीं वोह तो नहीं मगर नसीह़त सारे जहान के लिये

ع ۵ ۲۴ ۱۲

وَ لَتَعْلَمُنَّ نَبَاَهٗ بَعْدَ حِیْنٍ ۝٨٨

और ज़रूर एक वक़्त के बा'द तुम उस की ख़बर जानोगे[106]

ایاتها ٧٥ ‏ ۳۹ سُوْرَةُ الزُّمَرِ مَكِّيَّةٌ ٥٩ ‏ رکوعاتها ٨

सूरए ज़ुमर मक्किय्या है, इस में पछत्तर आयतें और आठ रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

100 : अपनी सरकशी व ना फ़रमानी व तकब्बुर के बाइ़स, फिर अल्लाह तआ़ला ने उस की सूरत बदल दी, वोह पहले ह़सीन था बद शक्ल रू सियाह कर दिया गया। और उस की नूरानिय्यत सल्ब कर दी गई। 101 : और क़ियामत के बा'द ला'नत भी और त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाब भी 102 : आदम عَلَيْهِ السَّلَام और इन की ज़ुर्रिय्यत अपने फ़ना होने के बा'द जज़ा के लिये और इस से उस की मुराद येह थी कि वोह इन्सानों को गुमराह करने के लिये फ़राग़त पाए और इन से अपना बुग़्ज़ ख़ूब निकाले और मौत से बिल्कुल बच जाए क्यूं कि उठने के बा'द मौत नहीं है। 103 : या'नी नफ़्ख़ए ऊला तक जिस को ख़ल्क़ की फ़ना के लिये मुअ़य्यन फ़रमाया गया। 104 : मअ़ तेरी ज़ुर्रिय्यत के 105 : या'नी इन्सानों में से 106 : ह़ज़रते इब्ने

www.dawateislami.net